कथा-कहानी मंच

सिर कटी लाश

विपिन बिहारी

जन्म :
2 जनवरी 1965

शिक्षा :
बी.ए. आनर्स (राज.विज्ञान)

कृतियां:
20 कहानी संग्रह, 1 आलोचना
3 कविता संग्रह, 8 उपन्यास,
1 लघु कथा संग्रह,

विशेष:
साहित्य पर दो छात्र द्वारा पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त एवं तीन छात्राएं शोधरत

संपर्क :
जगदेव नगर, डेल्हा गया (बिहार), पिन 823002 **मो.** 8298139504

बड़ी बस्ती का रास्ता छोटी बस्ती से होकर गुजरता था। रास्ता छोटी बस्ती को फाड़कर निकला हुआ था। रास्ते पर आवागमन देर रात तक बंद नहीं होता था। पहले गाड़ियां बहुत कम हुआ करती थीं, इक्का-दुक्का मोटर साइकिलें ही आती-जाती थीं। रास्ते के अगल-बगल के घरों के बच्चों को डर कम लगता था। लेकिन आजकल तो मोटर साइकिलें रेलमपेल हो गई थीं और हर मिनट-दो मिनट पर मोटर साइकिलें गुजरती रहती थीं। जिससे बच्चों के दुर्घटनाग्रस्त होने का खतरा अत्यधिक बढ़ गया था। मां-बापों को बच्चों की चिंता हमेशा सताती रहती थी। मोटर साइकिल सवार भी वैसे ही होते थे, किसे धक्का मारते हुए निकल जाएं। किसे रौंद कर फुर्र हो जाएं, जैसे छोटी बस्ती के लोग उनके लिए कीड़े-मकोड़े से लगते थे। कुछ छोटी-मोटी दुर्घटनाएं भी हो चुकी थीं। कुछ कहने पर गालियां भी सुननी पड़ती थीं, 'साले, देखते नहीं कि कौन आ रहा है। रास्ते को अपने बाप की मिल्कियत समझने लगे हो क्या? " छोटी बस्तीवाले मन मसोसकर रह जाते थे ख़क्या जमाना है, गलती भी और उस पर रंगदारी भी।

रात के समय की स्थिति तो और डरावनी हो जाती थी।रात में उस रास्ते से गुजरनेवाले अक्सर नशे में धुत होते थे।उस हाल में किस पर गाज गिर जाए,खासकर औरतें डरी-सहमी होती थीं, किसके साथ कौन बदतमीजी कर बैठे? शाम होते ही औरतें अपने दड़वे में समा जाती थीं।नजर आते थे सिर्फ मर्द और बच्चे। औरतों के नजर न आने से मर्दों को उनकी गालियां सुननी पड़ जाती थीं।जब कोई नजर नहीं आता था, तो वे बेलगाम गरियाते हुए गुजरते थे,"अरे, कहां छुप गया है रे भोंसड़ीवाला, गांड़ मरवा रहा है क्या अपनी मौगियन से।देखो,हम तेरे बाप जा रहे हैं।" कभी दरवाजे पर उनकी लात भी बज जाती थी," निकल बाहर,मादर चोख़्हम फारवर्ड हैं,जो चाहेंगे कर देंगे।अगर आज चाहें तो घर में घुसके मारेंगे। नहीं जानता है, मेरे मौसा एमपी हैं। मेरा कोई कुछ

नहीं बिगाड़ सकता। तुम लोगों को हमारे रहमोकरम पर ही जीना है, जीना पड़ेगा। कुछ भी कर लो, हमारी रंगदारी कभी नहीं खतम होनेवाली है।" ऐसी नौबत रोज ही गुजरती थी छोटी बस्ती पर।छोटी बह्ती वाले मौन होते थे। उनका कोई भी प्रतिकार नहीं कर पाता था। इसके पीछे का कारण क्या था, यह समझने की चीज थी। छोटी बस्तीवालों का मनोबल तोड़ दिया गया था सदियों से। या वह खौफ था, जो बड़ी बस्तीवालों ने फैला रखा था छोटी-मोटी घटनाओं की आड़ में, जबकि शारीरिक रूप से छोटी बस्तीवाले उनसे मजबूत ही दिखते थे, लेकिन शायद उनकी मानसिकता गुलामों जैसी हो गई थी।

इसी दशा में छोटी बस्ती की कई पीढ़ियां गुजर गई थीं। छोटी बस्तीवालों ने कोई विद्रोह नहीं किया था। शायद वे मर गए थे—शायद उनकी आत्मा को कोई चोट नहीं लगती थी? शायद उनका नैतिक बल इतना तोड़ दिया गया था कि सारा कुछ गुजरने के बाद भी वे झंकृत नहीं हो पाते थे। लेकिन कब तक छोटी बस्तीवाले ऐसी जिल्लत भरी जिंदगी जीते रहेंगे, एक अहम सवाल था।

अचानक ही छोटी बस्ती में एक चिंगारी सुलग उठी थी। छेदी का बेटा फुटानी कॉलेज से आया था घर छुट्टियों में। वह पहला शख्स था, जो छोटी बस्ती से निकलकर शहर गया था पढ़ने। पढ़ने में वह क्या था, कैसा था, यह अलग बात थी, लेकिन उसकी जवानी उसके पोर-पोर से फूटती हुई नजर आ रही थी। गठीला बदन जैसे वह अखाड़े में अभ्यास करता रहा हो। हुआ ये था कि रामसूचित बाबू का बेटा परमिंदर शाम में पीकर बर्राते हुए छोटी बस्ती के रास्ते से गुजर रहा था कि उसकी नजर दशरथ की बहू सुखिया, जो रास्ते के किनारे गड़े हैंड पंप से पानी निकालने आई हुई थी, पड़ गई थी। फिर क्या था, उसकी बोली ही बदल गई, "क्या मेरी जान, क्या मस्त लग रही हो, कहां छुपी हुई थी अब तक...?"

परमिंदर की बातें सुनते ही सुखिया कुछ प्रतिरोध करने की बजाय घर के भीतर भागती हुई समा गई थी। भागने के क्रम में उसके हाथ से बाल्टी छूट गई थी। बाल्टी के जमीन पर गिरते ही एक आवाज हुई। आवाज सुनकर उसकी सास सोमरी चिल्लाने लगी, "क्या हुआ रे? "

"माय, देखिए न, बाहर कोई है, जो अंट-शंट बोले जा रहा है।"

सोमरी घर से निकलकर तेजी से रास्ते पर आ गई थी, परंतु वह गुस्सा करने की बजाय धीमी आवाज में ही बोली, ''क्या हुआ गंऊवा, इतना पी लिए हैं कि कोई दिखाई नहीं पड़ता? कुछ तो सोचिए-समझिए। ऐसे-वैसे काहे बोल रहे हैं? "

"हम बोलेंगे, क्या कर लेगी तू? अरे, एक-एक करके सबको चखेंगे हम, तुझे भी चखेंगे। कहां गई वो? " ऐसा लगा था कि परमिंदर सोमरी को ठेलते हुए उसके घर में घुस आएगा।

"ऐसा काहे करते हैं, हम भी अदमिए ही हैं। कुछ तो रहम कीजिए।" सोमरी जैसे गिड़गिड़ा रही थी।

लेकिन परमिंदर मानने के लिए तैयार नहीं था। इस बकझक की आवाज पूरी बस्ती में फैल गई थी। लोग ये जानने के लिए उतना बेचैन नहीं हुए थे, जितना होना चाहिए था, जैसे उन्हें पहले से पता था कि क्या हो रहा है। वे सिर्फ तमाशा ही देख सकते थे, कुछ बोल नहीं सकते थे। फिर भी वे दरवाजे पर निकल आए थे। उसी में एक था फुटानी। वह घर से निकलकर सोमरी और परमिंदर के पास आ गया था, हालांकि उसकी अम्मा सुबसिया ने उसे मना किया था, लेकिन वह माना नहीं।

"अरे बाबू, कहां जा रहा है? चल घर में। यहां रोज ही तमाशा लगता है।" सुबसिया ने फुटानी के हाथ पकड़ने की भी कोशिश की थी, लेकिन उसने सुबसिया का हाथ झटकते हुए चल पड़ा था।

"क्या बात है चाची? इस समय हल्ला-गुदाल काहे हो रहा है? " सोमरी से पूछा था फुटानी ने।

"कुछ नहीं हुआ बबुआ, ऐसे ही।" सोमरी अब भी चाह रही थी, बात बढ़े नहीं।

"तू कौन है और क्या कर सकता है? हमारी हुकूमत चलती है इस बस्ती पर, इस इलाके में। हम इस इलाके के राजा हैं। और इस बस्ती के सारे के सारे हमारे गुलाम हैं, और तू भी है। हम अपने गुलामों के साथ कुछ भी कर सकते हैं। हम दाता हैं और इस बस्ती के हमारे टुकड़ों पर पलनेवाले हैं। हमारी मरजी,जो चाहेंगे करेंगे। जो औरत हमें पसंद आ गई, उसके साथ हम मौज-मस्ती करेंगे।

इस बस्ती की सारी औरतों पर हमारा हक है। तू हमारा क्या कर सकता है? हम कई-कई औरतों के मालिक हैं।" परमिंदर इतना कहते हुए सोमरी के हाथ पकड़ने के लिए झपटा था। सोमरी अपने बचावे में झटके से पीछे हो गई थी। तभी फुटानी ने परमिंदर को थाम लिया।

"देखिए बाबू, अभी आप ठीक हालत में नहीं हैं। अपने घर जाइए। इस हालत में ये सब कीजिएगा तो किसी को भी बुरा लग जाएगा। जाइए महाराज, काहे टंटा खड़ा करते हैं? " फुटानी का गुस्सा फूटने लगा था, परंतु वह खुद को नियंत्रित किए हुए था।

"तू कौन होता है रे मादर... हमें मना करनेवाला, हमको चिन्हता है कि हम कौन हैं? हम अपने घर जाएं या नहीं जाएं, हमारी मरजी, तू कहनेवाला कौन होता है? " परमिंदर ने फुटानी पर हाथ चला दिया था।

जैसे फुटानी को इस बात का पता था कि ऐसा कुछ होनेवाला है, उसने परमिंदर का हाथ पकड़कर मरोड़ दिया और उसे जमीन पर पटक दिया, ''साला,समझा रहे हैं तो समझ ही नहीं रहा है, क्या समझ लिया है, हम आदमी न हुए, राह के ढ़ेला हो गए, सड़ा-गला जो भी आता है, जात के नाम पर ठोकरा जाता है। कहते हैं न कि नींबुआ ज्यादा गारने से तीता हो जाता है।" परमिंदर चित गिर गया था जमीन पर। फुटानी उसकी छाती पर चढ़ बैठा था।

छोटी बस्तीवाले भौचक्क थे—इ क्या हुआ? मधुमक्खी के छत्ते में ढ़ेला मार दिया। अब तो बवाल धइल है। गेंहू के साथ घुन भी पिसाएगा।

"अरे बबुआ, इ क्या कर दिया? इ बबुआन है। हम लोग के करम में ही है लात-जूता खाना। क्या करें, सब ईश्वर में ही दोष है कि हम लोगों को अछूत बनाया।" छाती ठेठाते हुए सुबसिया दौड़ी गई थी फुटानी के पास और उससे लटक गई थी, ''छोड़ इसको, इ क्या कर रहा है तू? ... अब ता...।" फुटानी ने परमिंदर के चेहरे-छाती पर कई मुक्के जड़ दिए थे। सुबसिया ने उसका हाथ पकड़ लिया था।

परमिंदर बदहवास हो गया था। जब वह छूटा तो गालियां बकते और धमकाते हुए बड़ी बस्ती की तरफ भागने लगा था, ''देख, अब हम क्या क्या करते हैं। साले, एक-एक को नहीं नापा तो फिर पैदाइश में फरक होगा।"

परमिंदर के जाते ही छोटी बस्तीवाले फुटानी को नोंचनै लगे थे। सोमरी बोल रही थी, ''मारपीट काहे के लिए किए, मेरा हाथ ही तो पकड़ रहा था। उससे मेरा क्या हो जाता? हम लोग तो इ सब रोज ही तो सहते रहे हैं। जब दैवा ने ही ऐसा बनाया है तो हम लोगों का कौन-सा जोर चलेगा? बबुआ, तूने तो आग ही लगा दिया। अब क्या होगा,अब तो भगवान ही जाने।"

"अरे, चुपकर। यहां सब मुरदा ही हो? डूब मर चुल्लू भर पानी में। आज तक क्या किए, चुप रहने के सिवा। तभी तो घर में घुस जाता है। बेटी-बहिन तक को नहीं बख्शाता। इ धरती पर जीना है तो मुरदा बनके काहे जिएंगे। जब वो सताता है तो चुप रहने पर भी कहां छोड़ता है? तब काहे नहीं लड़के ही सताए जाएं। कुछ नहीं होगा। चुप देखते जाओ। कितना हल्ला-गुदाल करते हैं वे लोग। जो जिंदा हैं, वे मेरे पीछे आ जाएं। जो मुरदा हैं, अपने घर में लुका जाएं। मैं अकेला खड़ा हूं उनसे लड़ने के लिए। देखता हूं, वे मेरा क्या कर लेते हैं? "

"तू पगला गया है, भाग जा यहां से।" सुबसिया फुटानी को घर की तरफ ठेलने लगी थी।

"अरे माय, कुछ नहीं होगा, तू देखना।" फुटानी सुबसिया से खुद को छुड़ाने की कोशिश कर रहा था।

सुबसिया हार गई थी। उसका कलेजा रेलगाड़ी हो गया था..., फुटानी गया हाथ से। मौके पर वह रो भी नहीं सकती थी, लेकिन आशंकाओं से उसके हाथ-पांव सुन्न पड़ते जा रहे थे।

"कोई भी आए, देखता हूं, कौन क्या कर लेता है। रोज-रोज मरने से तो अच्छा है, एक दिन लड़ते हुए मर जाना। अरे, मैं अकेले नहीं मरूंगा, उनके दो-चार को मारने के बाद ही मरूंगा।" फुटानी बौंख रहा था। उसे रोकने की कोशिश भी कोई नहीं कर रहा था।

"बहुत अच्छा किया फुटानी भाय, हम भी चाहते रहे थे कि सबने हमारे हाथ बांध दिए। हमें रोज डराते हैं यह कहके कि बड़ी बस्तीवाले आदमी निगलते हैं।" पुकार का बेटा सुन्नर फुटानी की पीठ पीछे खड़ा हो गया

था, ''जय चाहे खय, आज फैसला होके रहेगा।"

फुटानी के पीछे सुन्नर आया तो फिर नोखा, मानिक और खेलावन भी आकर खड़े हो गए धे। उनके हाथों में हथियार के तौर पर कुछ न कुछ था। एक तरह से कहा जाए, हाथ में जो भी आया, वह उनका हथियार हो गया था। ऐसा भी लग रहा था, सदियों का गुस्सा आज परमिंदर के बहाने फुटानी के नेतृत्व में उबल पड़ा था। उनमें इतनी ताकत आ गई थी कि वे किसी भी बंदिश को तोड़ सकते थे।

परमिंदर चिल्लाते हुए बड़ी बस्ती पहुंचा था। उसे छोटी बस्तीवालों ने पीटा है, यह खबर जंगल की आग की तरह बड़ी बस्ती में फैल गई थी। अंधेरा कुछ गहरा हो गया था। लोग टॉर्च जला-जलाकर परमिंदर की हालत का मुआयना कर रहे थे। उसके चेहरे पर चोट के कई गहरे निशान देख रहे थे। छोटी बस्ती के नाम पर एक क्षण के लिए भौचक्क की स्थिति पैदा हो गई थी। सब्र का बांध आखिर टूट ही गया था। छोटी बस्ती ने पीट दिया? कौन सूरमा पैदा हो गया है वहां, एक बूंद भी नहीं डरा? परमिंदर, कौन है, कहां का है? लेकिन ये पूछनेवाला कोई नहीं था परमिंदर से कि आखिर ऐसा हुआ तो क्यों हुआ? गोया बड़ी बस्तीवाले को मारने-सताने का जन्मसिद्ध अधिकार मिला हुआ हो।

बड़ी बस्ती के कुछेक लड़के प्रतिक्रिया में छोटी बस्ती की दौड़ने वाले ही थे कि एक बुजुर्ग ने उन्हें रोका, ''ऐसे मत जाओ बाबू लोग। परमिंदर को ठोंकने की हिम्मत उन लोगों ने की है तो समझो, अचानक क्या हुआ कि वे यहां तक उतर आए? उनका गुस्सा है कि उनकी भी तैयारी है लड़ने-भिड़ने की सोच-समझ लो।"

बुजुर्ग की बात मानने-समझनेवाले लड़के कम ही थे। वे भालू-सियार की तरह हुहु आते हुए दौड़ते ही गए थे छोटी बस्ती की तरफ। जब वे छोटी बस्ती पहुंचे तो वहां सन्नाटा पसरा हुआ था। वे लोग बंद दरवाजे पर लात मारने लगे थे। उन्होंने दो-तीन दरवाजे पर ही लात मारी थी कि फुटानी और उसके पीछे कई लड़के आ गए थे, जिनमें सुन्नर प्रमुख था, ''कौन है रे?"

"तू है? आज तेरी तो, छठी का दूध उगला देंगे।"

"तब उगला ही लो। सब दिन क्या हम लोगों को साग-मुरई ही समझेगा? आओ,हम लोग भी तैयार ही हैं। देखते है कि कौन पीछे हटता है? मारेंगे या फिर मरेंगे।" फुटानी ने दहाड़ मारी थी।

फुटानी की दहाड़ दूर तक गूंज पड़ी थी।

बड़ी बस्तीवाले ठिठक गए थे फुटानी की दहाड़ से... ये क्या हो रहा था? पहली बार ही उन्हें चुनौती मिल रही थी। ऐसी चुनौती से निपटने के लिए उनकी कोई योजना नहीं थी। उन्हें उस समाज से चुनौती मिल रही थी, जो वंचित था। वंचित समाज अचानक जब चुनौती बनता है तो बड़े-बड़े दरिंदों की हिम्मत धाराशायी हो जाती है।वही यहां पर हो रहा था। लड़के जो गुदाल करते हुए आए थे, उनके पांव ठिठक गए थे। उन्हें ये समझ में नहीं आ रहा था कि वे अब क्या करें। उन्हें ये भी समझ में नहीं आ रहा था कि छोटी बस्ती में उनसे लड़ने के लिए कितने लोग थे।

रात गहरी होती जा रही थी।

"बहुत सता लिए तुम लोग। जब शांत पानी अचानक उफनने लगता है तो बड़ी-बड़ी हस्तियां नष्ट-विनष्ट हो जाती हैं। बहुत सह लिए।अब हम तेरी हुकूमत को मानने से इंकार करते हैं।"

बड़ी बस्तीवाले अपना-सा मुंह लिए वापस हो गए थे। जब कुछ होता हुआ नहीं देख बुजुर्ग ने, जिसने मना किया था, कटाक्ष किया था, ''लड़कर आ गए? बानर सेना की तरह बिना सोचे-विचारे ही दौड़ पड़े। कुछ तो समझना चाहिए था? हो गई न बेइज्जती? आज परमिंदर पिटाया है, कल कोई और पिटाएगा। अत्याचार का अंत एक न एक दिन होता ही है। क्यों पिटाया परमिंदर, अचानक उनके सिंग उग आए हैं क्या, कुछ तो ऐसा-वैसा किया ही होगा उसने?"

बुजुर्ग की बातों में जो भी दम रहा हो, लेकिन बड़ी बस्तीवाले एक सवाल से जूझने लगे थे। यदि तुरंत जवाब नहीं ढूंढ़ा गया तो एक दिन उनकी सामंती व्यवस्था भरभराकर ध्वस्त हो जाएगी। उन्हें किसी भी सूरत में अपनी व्यवस्था को बनाए रखना था। उनकी व्यवस्था उनकी पहचान है, उनका अस्तित्व है। इसके लिए वे किसी भी हद तक जा सकते थे।

फुटानी को कैसे रोका जाए, बड़ी बस्ती के मानिंदे लोग विचार कर रहे थे। सूर्यभान बड़ी बस्ती के मुख्य माने जाते थे। उन्होंने अपने लोगों को ललकारा था," जहां मिले फुटनिया, वहीं उस पर चहड़ जाओ। वह मरा जाता है तो समझो, एक बड़ा कांटा निकल गया पांव से। उसे मारना जरूरी है, नहीं तो उसकी देखा-देखी उसके जैसे और भी पैदा हो जाएंगे। उनकी संख्या नहीं बढ़नी चाहिए। वैसे लोगों को मारना अपराध नहीं होता। एक सामाजिक काम होता है। उसके मरने पर कोर्ट-कचहरी होती है समझ लेंगे।"

"लेकिन सवाल ये भी है कि अचानक ये सब कैसे हो गया? जमीन पर रेंगने वाला समाज, ताल कैसे ठोंकने लग गया?" सूर्यभान से राजेश्वर ने एक सार्वजनिक सवाल किया था, ''कहीं उसके पीछे कोई संगठन तो नहीं सक्रिय हो गया?"

"कोई संगठन भी उसके पीछे होगा तो उसे भी देख लेंगे।" सूर्यभान ताव खाते हुए बोले थे, ''बहुत देखे हैं संगठन, सभी धाराशायी कर दिए जाएंगे।"

बड़ी बस्ती की तरफ से फुटानी को धाराशायी करने की कोशिश शुरू हो गई थी।

फुटानी को भी इस बात का अंदाजा था कि उसके इस कृत्य के विरुद्ध कुछ होनेवाला है। वह अब आम इंसान नहीं रह गया था। उसे जिंदा रहना है तो फूंक-फूंककर कदम उठाने होंगे। उसने भी अपनी ताकत बढ़ाने की कोशिश शुरू कर दी थी। उसने एक गिरोह बना लिया था, जिसमें छोटी बस्ती के लड़के तो थे ही, कुछ दूसरी छोटी बस्तियों के भी लड़के, जो एक खास वर्ग के लोगों से परेशान थे, शामिल हो गए थे। साथ ही हथियारों से लैश होने की भी कोशिश की जा रही थी। फुटानी का मानना था, जब वह हथियारबंद हो जाएगा पूरी तरह तो आमने-सामने की भी लड़ाई में उसे दिक्कत नहीं होगी। वह आमने-सामने की लड़ाई चाहता था।

फुटानी के चाक-चौबंद होने की खबर बड़ी बस्तीवालों को भी मिल रही थी। उसका ही नतीजा हुआ कि बड़ी बस्तीवालों ने अपना रास्ता ही बदल दिया था। छोटी बस्ती से वे गुजरेंगे तो कब किसके साथ क्या हो जाए, कुछ कहा नहीं जा सकता था।

बड़ी बस्तीवालों के लिए फुटानी एक बड़ा सिरदर्द हो गया था। उससे कैसे निपटा जाए, एक आदमकद सवाल इर्द-गिर्द घूम रहा था। इस बीच फुटानी पर कई हमले किए गए, लेकिन वह हर बार ही बच निकला। उसके जवाब से बड़ी बस्तीवाले कई घायल भी हुए थे।

"साला फुटिया, कितना शातिर है कि हर बार बच जाता है।" सूर्यभान कह रहे थे, ''उस पर हमले बंद नहीं होने चाहिए। लगे रहो। कभी न कभी तो कोई छेद छोड़ेगा ही और हम उससे निपटने में सफल हो जाएंगे। जहां भी नजर आए, उस पर टूट पड़ो। लेकिन इतना ध्यान रहे, उसे कभी कमजोर मत समझना। उसे कमजोर समझने का मतलब है, अपना नुकसान कर बैठना।"

"इ तो भाय, अकेले ही सब पर भारी पड़ रहा है।" परमेश्वर बोले थे।

"कितना भारी पड़ेगा, और कब तक भारी पड़ेगा अकेला। अकेला चना भांड़ नहीं फोड़ता। ऐसे ही हम लोग राज नहीं करते हैं। साम, दाम, दंड, भेद जैसे अस्त्र से हम लोग लैश हैं। अभी उसे उड़ने दो। फिर ब्रह्मास्त्र चलेगा, जिससे उसे भगवान भी नहीं बचा पाएगा।"

"वो कैसे?"

"हम लोग जो अस्त्र चलाए हैं, उसे चलने दीजिए। फिर देखते हैं।"

फुटानी दिन-दिन पगता ही होता जा रहा था। दिन-दिन वह अभेद किले में तब्दील होता जा रहा था। बड़ी बस्तीवाले उसे रोकने में सक्षम नहीं हो पा रहे थे। कभी-कभी तो वे फुटानी के आगे भीगी बिल्ली नजर आते थे। एक समय ऐसा भी लगा था कि बड़ी बस्तीवाले फुटानी की जी हुजूरी में लगे हुए थे। सामने तो उसकी जी हुजूरी कर लेते थे, लेकिन उनके मन की टीस दब नहीं पा रही थी।

आखिर में सूर्यभान ने सुझाया था, ''फुटनिया ऐसे नहीं मराएगा, उसके गिरोह के किसी आदमी को फोड़ो। वह न माने तो उसे लालच दो। लालच बड़े-बड़े को भी हिला सकता है। उसे फोड़ने के लिए, जो फूट सकता है, उससे दोस्ती गांठों। वह बात-गाली देता है, सुन जाओ। क्यों नहीं फूटेगा?"

यहां पर फुटानी के खिलाफ ताकत का इस्तेमाल नहीं हो रहा था, बल्कि उसके आदमियों को तोड़ने के उपाय ढूंढ़े जा रहे थे।

पहले फुटानी के आदमियों को फोड़ने के लिए उस आदमी की पहचान की जाने लगी थी कि लालच में कौन बझ सकता है।

मशक्कत के बाद ही सुन्नर हाथ लगा था। बड़ी बस्ती के तीन लोगों को उसके पीछे लगाया गया था। तीनों ने उससे दोस्ती गांठनी शुरू कर दी थी। जब भी सुन्नर उनसे मिलता, वे कहने लगते, ''सुन्नर भाय, कैसे हो? चलो, कुछ खाते-पीते हैं। तू भाय, हीरा हो हीरा। बहुत अच्छा कर रहे हो। कोई कितना बर्दाश्त करेगा? सहने की भी एक सीमा होती हैं। जैसा करता है, वैसा ही पाता है। स्वर्ग-नरक कहीं दूसरी जगह नहीं है। इसी भूलोक में ही करम का हिसाब होता है। बड़ी बस्तीवाले आग ही मूतने लगे थे।"

सुन्नर को पहले ये बात जरा भी समझ में नहीं आई कि बड़ी बस्तीवाले उसकी इतनी खुशामद क्यों कर रहे हैं। हालांकि वह बेहोशियार बिल्कुल नहीं था। लेकिन इतना गुमान उसे जरूर था कि बड़ी बस्तीवाले उसके सामने कैसे बकरी बने हुए थे।

कई मुलाकातों के बाद कंचन नाम के शख्स ने कहा था, ''सुन्नर! एक दिन चलो हमारी बस्ती में। हम लोग तुम्हें अपना समझकर स्वागत करेंगे। बड़ी बस्ती के अंदर ही छोटी बस्ती आती हैं। बड़ी बस्ती का जब कोई नाम होता है तो उसमें छोटी बस्ती भी आ जाती है। समझो, बड़ी बस्ती भी तुम्हारी ही है।"

बहला-फुसलाकर तीनों ले आए थे सुन्नर को बड़ी बस्ती में। उसे सूर्यभान के दरवाजे पर बिठाया गया था। उसे देखने के लिए एक भीड़-सी उमड़ पड़ी थी। लेकिन सूर्यभान ने जल्दी ही सभी को अपने दरवाजे से हटा दिया था यह कहकर, ''यहां कोई तमाशा नहीं लगा हुआ है कि सभी का मनोरंजन होगा।

सुन्नर का भरपूर स्वागत किया गया था। वह स्वागत से फस्त-पस्त हो गया था।

"तुम हमारे आदमी हो। कहो, तुझे क्या चाहिए... धन-दौलत, खेती-बाड़ी। तुझे कुछ भी देने के लिए तैयार हैं हम लोग। हम मानते हैं कि हमारे पूर्वजों से कुछ गलतियां हुई हैं और आज के कुछ लोग भी उसी गलतियों को दुहरा रहे हैं, जबकि ऐसा बिल्कुल नहीं होना चाहिए।" सूर्यभान सुन्नर के आगे बैठे हुए थे।

"आप कहना क्या चाहते हैं?" सुंदर ने पूछ दिया था। वह चोकन्ना भी था।

"कुछ नहीं।"

"तब फिर? "

"देखो सुंदर! तुम हमारे बन जाओ। फुटानी के साथ रहकर तुझे क्या मिल रहा है? उसके साथ रहते हो तो तेरी जान पर भी खतरा बना रहता है। तुम कब मारे जाओगे, कोई नहीं जानता।"

"मुझे कौन मारेगा? "

"हम लोग मारेंगे।"

"तब मारते क्यों नहीं?" सुंदर अचानक भड़क उठा था।

"हम तुझे यहां मारने के लिए नहीं बुलाए हैं।"

"तब काहे लिए बुलाए हैं? "

"तुझे अपना बनाने के लिए।"

सुन्नर शांत हो गया था। सूर्यभान को लग रहा था, सुन्नर से अपने मन की बात कैसे कहें। वे असमंजस में दिख रहे थे। इसी असमंजस में देर तक चुप्पी सधी रही थी।

"हम चलते हैं।"

"अरे बैठो न भाय, हड़बड़ाते हो क्यों? तुमसे अभी बहुत बात बतियानी है।अरे! कुछ लाओ सुन्नर के लिए।" सूर्यभान चिल्लाए थे, ''देख सुंदर, फुटानी से हम लोगों को मुक्ति दिला दो। यह काम तुम ही कर सकते हो, और तुझे जो चाहिए, हम लोग पूरा करने के लिए तैयार हैं। छोटी बस्ती से लगी कुछ जमीनें हैं, वे तुम्हारे नाम। तुम हमारे बन जाओ। फुटानी नहीं भी रहेगा तो छोटी बस्ती की तरफ कोई आंख उठाकर नहीं देखेगा। वैसे हम लोग रास्ता बदल ही चुके हैं। इतना कम है क्या? छोटी बस्ती से अब कोई नहीं आता-जाता।" सूर्यभान ने जाल फैंका था सुन्नर पर।

सुन्दर मौन था। सूर्यभान उसका चेहरा देख रहे थे बड़े गौर से। लगता था सुन्नर उनके जाल में फंस रहा था।

अचानक ही सुन्नर बोल पड़ा था, ''मुझे धोखा तो नहीं न देंगे?"

"नहीं भाय, हम एकजनमिया हैं। हम जान दे सकते हैं, लेकिन जबान से कभी नहीं मुकर सकते। शक लगे तो आजमा कर देख सकते हो।" सूर्यभान भीतर से बल्लियों उछलने लगे थे। अपनी सफलता पर-चिरैंया फंस गई जाल में। अब देखते हैं बेटा कब तक तू बचता है?

सुन्नर का बड़ी बस्ती में आना-जाना शुरू हो गया था। बड़ी बस्तीवाले उसके सम्मान में बिछ-बिछ जाते थे। कभी-कभी तो ऐसा लगता

था कि वह बड़ी बस्ती का दामाद हो। सम्मान पाकर वह थई-थई हो जाता था और पछताने भी लगता था। बेकार में उसने रार मोल ले लिया था बड़ी बस्तीवालों से, ये लोग तो...। सोचते समय वह पिछला इतिहास बिल्कुल भूल जाता था। वर्तमान ही उसका सच होता दिख रहा था।

और फिर एक दिन फुटानी की सिर कटी लाश मिली। अफवाह तो यहां तक उड़ी कि फुटानी का सिर काटनेवाला बड़ी बस्ती का कोई नहीं था, बल्कि सुन्नर ही था। फुटानी सोया हुआ था और पूरी योजना के साथ सुन्नर ने...

बड़ी बस्ती में जश्न मनाया जा रहा था। फुटानी के मरने पर सभी खुशी से तहबोर थे। पैर का सबसे बड़ा कांटा निकल गया था। सूर्यभान अपनी मूंछों तले मुस्कुरा रहे थे। उनकी साम, दाम, दंड, भेद की नीति काम कर गई थी। वे अजेय हैं। उनका किला कभी नहीं ध्वस्त हो सकता है। इसी जश्न के माहौल में सुन्नर उनके बीच चला गया था। सूर्यभान को उनकी जबान याद दिलाने। सुर्यभान ये कहते हुए ठठाकर हंसे थे, ''जो तुम्हारा अपना था, उसका नहीं हो पाए तुम... और कौन-सी जबान? मैंने किसी को कोई जबान नहीं दी है। फुटानी मरा गया। वह एक डर था हमारे बीच। जब डर ही समाप्त हो गया तो तुम क्या चीज हो?'' अब सुन्नर पछता रहा था कि रो रहा था कि सुन्न हुआ जा रहा था? जश्न के माहौल से वह चुपके से निकल आया।

विजय वास्तविक की दो कविताएं

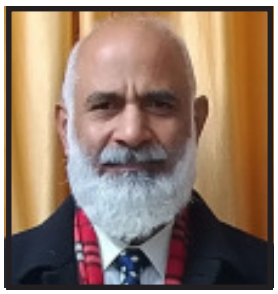

जन्म स्थानः नवाशहर पजाब, शिक्षाः दिल्ली विश्वविद्यालय से विज्ञान स्नातक। दिल्ली विश्वविद्यालय, बी.एससी. की पढ़ाई पूरी की और विज्ञान को समझने के बाद कई तरह के व्यापार किए। नौकरी कभी नहीं की। अपने अध्यन, शोध, विश्लेषण और अनुभव को समाज के सम्मुख प्रस्तुत करने के लिए वैचारिक लेखन, कविता और ग़ज़ल लेखन में सक्रिय हो गए। उनके लेखन कार्य का एकमात्र उद्देश्य चार्वाक, महावीर, बुद्ध, कबीर और रैदास की विचारधारा का संरक्षण और पोषण करना है तथा विचारों को अपने अंदाज में समाज तक पहुंचाना है। और समाज में व्याप्त ऊंच-नीच, भेदभाव, जातिवाद, ब्राह्मणवाद को खत्म करना है।

सुकून

चला था जानिब ए मंजिल मगर
सफर में ये क्या हो गया

समझ रहा था जिसे मंजिल
सफर वहीं से शुरू हो गया

पुरानी जानी-पहचानी सी हैं राहें
इन्हीं राहों में गुमराह हो गया

छोड़ दिया था गांव शहर के लिए
मुड़कर देखा मेरा गांव ही शहर हो गया

धोका मिला हैं सफर में बेइंतहा
पैर तो क्या जिगर भी लहुलुहान हो गया

उम्मीद थी जमाने से जब तक
जीना ही दुश्वार हो गया

उम्मीद खुद से है अब जमाने से नहीं
ये सबक मेरे दिल का सुकून हो गया

जमाने की हकीकत जानी है जबसे
मैं खुद से रूबरू हो गया

सुकून की तलास में सफर करता गया
सफर ही जिंदगी का सुकून हो गया

शैतान

गुनाह करके अफसोस कर ले जो
उस इंसान में ईमान बसा है

गुनाह करके उफ भी न करे जो
उस इंसान में शैतान बसा है

जरा गौर से तो देखो यारों
वो शैतान किस जगह बसा है

हर मुल्क को देख लिया हमने
हर मुल्क में शैतान बसा है

हर शहर को देख लिया हमने
हर शहर में शैतान बसा है

हर मकान को देख लिया हमने
हर मकान में शैतान बसा है

हर दिल को देख लिया हमने
हर दिल में शैतान बसा है

खुद पर गौर किया जब हमने
शैतान तो हम में भी बसा है